अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन में उपस्थित मुख्यमंत्री शिवराज सिंह, वाराणसी की सेंट्रल तिब्बत यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. गेशे वांग सेम्टन, वेदाचार्य डेविड फ्राले व अन्य।

हम सबके खून का रंग लाल

प्रो. गेशे वांग सेम्टन

वाराणसी के सेंट्रल तिब्बत यूनिवर्सिटी के पूर्व कुलपति प्रो. गेशे वांग सेम्टन ने कहा हम किसी भी रंग, भाषा या विचार के हों, हमारे खून का रंग एक ही है, लाल। भाईचारा अपनापन और एकता के साथ नैतिक अनुशासन का पालन कर मानव सभ्यता को ऊंचाइयों पर ले जा सकते हैं। कर्मकांड, साधन, दर्शन और आध्यात्मिकता से जीवन के प्रति दृष्टिकोण बदलता है और इस बदलाव में ही धर्म निहित है। केवल कर्मकांड से आध्यात्मिकता नहीं आती। तीन तरह के लोग मंदिर जाते हैं, पहले जो दूसरों के कल्याण की दुआ करते हैं, ये पुण्य है। दूसरे बस यूं ही घूमते-फिरते जाते हैं, ये न धर्म है और न अधर्म और तीसरे वो व्यक्ति जो दूसरों को दिखाने के लिए मंदिर जाते हैं, ये पाखंड है। धर्म के आधार पर नहीं माप जा सकता कि व्यक्ति कितना धार्मिक है। जब तक उसमें लोक कल्याण की भावना नहीं आएगी, वो सच्चा धर्म नहीं बनेगा।

दूसरे दिन महामंडलेश्वर अवधेशानंदगिरि महाराज का उद्बोधन

हमें खुद से मिलवाता है धर्म

दबंग रिपोर्टर • इंदौर

कुंभ का अर्थ है खुद से संवाद, ऐसा संवाद जो हमें अपने विचारों, स्वभाव से परिचित कराता है। धर्म की सही व्याख्या यही हो सकती है कि जो अपने लिए अच्छा न लगे, वो दूसरों के लिए मत करो। आत्मा की प्रतिकूलता नहीं होना चाहिए। धर्म हमें खुद से मिलवाता है, एक ऐसे रास्ते पर ले जाता है जहां हम पहचान पाते हैं कि हम क्या हैं?

उक्त बात अंतरराष्ट्रीय धर्म सम्मेलन के दूसरे दिन रविवार को शाम के सत्र में जूना अखाड़ा जालंधर के महामंडलेश्वर अवधेशानंदगिरि महाराज ने अपने 35 मिनट के धाराप्रवाह सारगर्भित उद्बोधन में कही। उन्होंने शुरुआत सबसे पहले हुए कुंभ से की। इस कुंभ से कोई कीचा नहीं निकला। दूसरा कुंभ वारोपी के नाम से हुआ, जिसे देवताओं ने नकार दिया था। तीसरा अमृतकुंभ हुआ जिससे धर्म की सही व्याख्या निकली। इस कुंभ ने आत्मविस्मृति नहीं दी, हम खुद को भूल गए।

स्वामीजी ने कहा अगले वर्ष उज्जैन में सिंहस्थ कुंभ हो रहा है। कुंभ का मतलब होता है खुद से संवाद, जो व्यक्ति खुद से संवाद करना सीख जाता है वह जीवन के मर्म को समझ लेता है। कुंभ में विचारों, स्वभावों और विषयों का एकत्रीकरण होता है। यहां हम जीवन के यथार्थ को समझते हैं, दूसरों के प्रति आदर करना सीखते हैं। दुनियाभर के सभी धर्मग्रंथ कहते हैं कि दूसरों का आदर करो। दूसरों से सहमत न भी हो तो भी उसे सुनो। इसी में जीवन की सार्थकता है कि संवाद बना रहे। वाद के साथ विवाद हो जाए तो युद्ध होता है।

महापौर भी हुईं शामिल

दुनिया को सिर्फ भोगवाद से खतरा

स्वामी अवधेशानंदजी ने कहा आज देश को न नक्सलवाद से खतरा है, न आतंकवाद से और न अन्य किसी वाद से, खतरा है तो पश्चिमी भोगवाद से। इससे केवल धर्म के मार्ग से ही निपटा जा सकता है। जो युवक-युवतियां इस भोगवाद से प्रभावित हैं, वो धर्म के अर्थ को समझें। वे पाएंगे कि उन्हें सच्चा रास्ता मिल गया है। उन्होंने कहा कोपेनहेगन में जलवायु परिवर्तन पर आयोजित सत्र में मैं गया था। वहां मैंने भारतीय सभ्यता और संस्कृति की बात की और देखते ही देखते पूरा विषय बदल गया और चर्चा अध्यात्म पर होने लगी। ये माना गया कि जलवायु पर मंडरा रहे खतरे से निपटने के लिए धर्म और अध्यात्म का सहारा लेना चाहिए। लोग प्रकृति से प्रेम करना सीखेंगे तो ये समस्या नहीं होगी।

परलोक में भी सुख की कामना

स्वामीजी ने कहा हमारी सभ्यता में केवल इस लोक की नहीं बल्कि परलोक में भी सुख की कामना की गई है। ये कैसे संभव है? धर्म मार्ग पर चलने से ही। उन्होंने मालवा की धरती को पुण्य-पावन बताते हुए कहा गीता में जो उपदेश श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया वो यहां उज्जैन में सीखा। यहां के इतिहास पुरुष हर्षवर्धन जैसा ही काम आज शिवराजसिंह चौहान कर रहे हैं। उन्होंने सिंहस्थ के पूर्व वैचारिक महाकुंभ का आयोजन कर सचमुच अनोखा और अद्भुत काम किया है।

दूसरे के विचारों का अनादर न करें

उन्होंने कहा गीता में प्रभु श्रीकृष्ण ने कहा है हमारी अपने विचारों में भले ही पूरी निष्ठा है, लेकिन दूसरे के विचारों का अनादर नहीं करना चाहिए। स्वामीजी ने कहा एक बार अमेरिका में एक परिसंवाद में मुझसे पूछा गया भारतीय दृष्टि से दुनिया क्या है? मैंने कहा आप पूरी दुनिया को एक बाजार समझते हो, जबकि भारत पूरी दुनिया को एक परिवार समझता है। वसुधैव कुटुंबकम की भावना हमारे यहां से ही पूरी दुनिया में फैली है।

भारत मानवता की जन्मभूमि

वेदाचार्य डेविड फ्राले

यूएसए की अमेरिकन इंस्टिट्यूट ऑफ वैदिक स्टडीज के निदेशक वेदाचार्य डेविड फ्राले ने कहा भारत मानवता की जन्मभूमि है। यहीं से वो विचार और मत निकले जिन्होंने दुनिया को प्रेम और शांति की सीख दी। योग, ध्यान के जरिए भारत में न केवल खुद को परिष्कृत करने की भावना आती है बल्कि दूसरों को भी शुद्ध और पावन विचारों से ओत-प्रोत कर पाती है। यहां स्वामी रामतीर्थ जैसे मनीषी हुए हैं, जिन्होंने पूरी दुनिया को प्रेम करना सिखाया। इस सत्र को न्यू एज इस्लाम के संस्थापक संपादक सुल्तान शाहिन, श्रीलंका के ऊर्जा मंत्री पीसी रणवका ने भी संबोधित किया। श्री रणवका की पुस्तक 'द थ्योरी ऑफ यूनिटी' का विमोचन भी किया गया।

प्रवेश पर रोक से कई श्रद्धालुओं को लौटना पड़ा

धर्म सम्मेलन में दूसरे दिन स्वामी अवधेशानंद को सुनने श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। कॉन्फ्रेंस हॉल खचाखच भरते ही अतिथियों का प्रवेश रोकना पड़ा, जिससे बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं को वापस लौटना पड़ा। सिंहस्थ से पूर्व होने वाले धर्म सम्मेलन में जूना अखाड़ा जालंधर पीठ के महामंडलेश्वर आचार्य स्वामी अवधेशानंदगिरि महाराज का उद्बोधन सुनने के लिए रविवार को ब्रिलियंट कन्वेंशन में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। 6.30 बजते-बजते कॉन्फ्रेंस हॉल खचाखच भर गया। आयोजकों ने बढ़ती भीड़ देख मुख्य द्वार पर श्रोताओं का प्रवेश बंद कर दिया, जिससे व्यवस्था तो बनी रही, लेकिन कई लोगों को वापस लौटना पड़ा। स्वामी अवधेशानंद महाराज के विश्वभर में सबसे ज्यादा भक्त हैं, इसका नजारा भी धर्म सम्मेलन में दिखा। यहां अधिकतर श्रोताओं में अयोध्या के रहवासी ही दिखाई दिए। हालांकि बाहर से आए संत महात्मा व अतिथि भी मौजूद थे, लेकिन हॉल में स्वामीजी को सुनने के लिए हर कोई उत्सुक दिखा।